

Padma Shri



PANDIT SHIVNATH MISHRA

Pandit Shivnath Mishra is a Sitarist from Benares Gharana. He represents a long lineage of Benares Gharana music tradition. He plays the four styles of Benares Gayaki Ang - Dhrupad, Khayal, Thumri, and Tappa, on the Sitar thus creating a unique style of playing the instrument. He has taken this lively and powerful style around the world and taught it to many students from India and abroad.

2. Born on 12th October, 1943 in Varanasi, Pandit Mishra started learning Sitar from the age of 8 from his uncle, legendary vocalist Pandit Mahadev Prasad Mishra of Benares Gharana. In 1976, he received his Sangeet Pravin degree from Prayag Sangeet Samiti, Allahabad. He was the Head of the Music Department at the Sampurnanand Sanskrit University in Varanasi, where he worked for 36 years.

3. Pandit Mishra has written a book-My Musical Journey, which consists of his 129 compositions based on 80 Hindustani Ragas. He is an 'A' grade artist of All India Radio and an "Established Artist" with Indian Council of Cultural Relations, an autonomous body of Ministry of External Affairs.

4. Pandit Mishra has performed with several international jazz artist such as John Handy, Paul Horn, David Freezen and Indian Classical artists such as Pandit Kishan Maharaj (Padma Vibhushan awardee), Pandit Samta Prasad Mishra (Padma Bhushan awardee) among others. He has played for National and International Television like BBC, CBC (Canadian Radio), Rai TV (Italy), and many more. He has given numerous demonstrations and has been a guest lecturer at many Universities in India and abroad, like University of Brighton and University of Chichester, United Kingdom under British Art Council also University of Torino, Italy, among others. He has four LPs and several CDs produced by Indian and International recording companies. He transfers his knowledge to many of his students in Guru Shishya Parampara and teaches underprivileged children free of cost, so the music carries on.

5. Pandit Mishra is a recipient of numerous awards and honours including U.P. Sangeet Natak Akademi Award in 2004; Swathi Thirunal Award by the Maharaja of Varanasi in 2015 and Recognition Award from International Yoga School of Spain.

पद्म श्री



पंडित शिवनाथ मिश्र

पंडित शिवनाथ मिश्र बनारस घराने के सितार वादक हैं। वह बनारस घराने की दीर्घ संगीत परंपरा के प्रतिनिधि हैं। वह सितार पर बनारस गायकी अंग की चार शैलियां — ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी और टप्पा बजाते हैं और इस प्रकार उन्होंने सितार बजाने की एक अनूठी शैली प्रतिपादित की है। उन्होंने इस जीवंत और सशक्त शैली का विश्व भर में प्रदर्शन किया है तथा इसे भारत और विदेश के बहुत से छात्रों को सिखाया है।

2. 12 अक्टूबर, 1943 को बनारस में जन्मे, पंडित मिश्र ने 8 वर्ष की आयु से अपने चाचा, बनारस घराने के प्रसिद्ध गायक पंडित महादेव प्रसाद मिश्र से सितार सीखना शुरू किया। 1976 में उन्होंने प्रयाग संगीत समिति, इलाहबाद से संगीत प्रवीण की उपाधि प्राप्त हुई। वह सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस में संगीत विभाग के विभागाध्यक्ष थे, जहां उन्होंने 36 वर्ष तक कार्य किया।

3. पंडित मिश्र ने एक पुस्तक — 'माय म्यूजिकल जर्नी' लिखी है, जिसमें 80 हिन्दुस्तानी रागों पर आधारित उनकी 129 बंदिश संकलित हैं। वह आकाशवाणी के 'ए' ग्रेड कलाकार हैं और विदेश मंत्रालय की स्वायत्त संस्था भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के "स्थापित कलाकार" हैं।

4. पंडित मिश्र ने कई अंतरराष्ट्रीय जैज कलाकारों जैसे जॉन हैंडी, पॉल हॉर्न, डेविड फ्रीजेन और भारतीय शास्त्रीय कलाकारों जैसे पंडित किशन महाराज (पद्म विभूषण से सम्मानित), पंडित समता प्रसाद मिश्र (पद्म भूषण से सम्मानित) और अन्य कलाकारों के साथ सितार वादन का प्रदर्शन किया है। उन्होंने बीबीसी, सीबीसी (कनाडाई रेडियो), राय टीवी (इटली) और कई अन्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय टेलीविजन के लिए सितार वादन किया है। उन्होंने बहुत बार भारत और ब्रिटिश आर्ट काउंसिल के तहत ब्राइटन विश्वविद्यालय और यूनिवर्सिटी ऑफ चिचेस्टर, यूनाइटेड किंगडम, टोरिनो विश्वविद्यालय, इटली आदि विदेशी विश्वविद्यालयों में सितार वादन प्रस्तुति की है और अतिथि व्याख्याता रहे हैं। उनके चार एलपी और कई सीडी हैं, जिनका निर्माण भारतीय और विदेशी कंपनियों ने किया है। वह गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत अपने बहुत से शिष्यों को सिखाते हैं और वंचित बच्चों को निःशुल्क सिखाते हैं, ताकि संगीत की परंपरा अनवरत चलती रहे।

5. पंडित मिश्र को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें 2004 में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; 2015 में वाराणसी के महाराजा द्वारा स्वाति थिरुनल पुरस्कार और स्पेन के अंतरराष्ट्रीय योग स्कूल से प्रशंसा पुरस्कार शामिल है।